तस्य दाक्षिण्यरूढेन नाम्ना मगधवंशजा ।

पत्नी सुदक्षिणेत्यासीदध्वरस्येव दक्षिणा ।।31।।

अन्वय तस्य मगधवंशजा दाक्षिण्यरूढेन नाम्ना अध्वरस्य (पत्नी) दक्षिणा इव सुदक्षिणा इति पत्नी आसीत्।

अनुवाद उस राजा की मगधवंश में उत्पन्न, दाक्षिण्य (पति की चित्तवृत्ति के अनुकरण में कुशल) के कारण प्रसिद्ध 'सुदक्षिणा' इस नाम वाली पत्नी थी, जैसे यज्ञ की पत्नी दक्षिणा (लोक प्रसिद्ध है)।

टिप्पणियां

मगधवंशजा मगधानां वंशः इति मगधवंशः (षष्ठी तत्पुरुष), मगधवंशे जाता (उपपद तत्पुरुष) जिसका जन्म मगधों के (राज) घराने में हुआ था, ''सुदक्षिणा' का विशेषण है। इससे सुदक्षिणा की कुलीनता प्रकट होती है। वह नृपति दिलीप के अनुरूप कुल-गुण-शील वाली थी। मगधवंश जन् ड् टाप्। उपपद सप्तम्यन्त होने पर जन् धातु में ड् प्रत्यय आता है। इस विशेषण से सुदक्षिणा के मातृकुल की उच्चता का द्योतन होता है।

दाक्षिण्यरूढेन दक्षिणस्य भावः दाक्षिण्यम्। दाक्षिण्य की परिभाषा है. **''परच्छन्दानुवर्तित्वम्''** अर्थात् दूसरों की चित्तवृत्ति का अनुकरण करने का गुण, शालीनता। दिलीप की पत्नी सुदक्षिणा अपने पति की चित्तवृत्ति के अनुकूल कार्य करती

थी। दाक्षिण्येन रूढम् दाक्षिण्यरूढम् (तृतीया तत्पुरुष), तेन। वह नाम (सुदक्षिणा) जैसे उनके दाक्षिण्य (शालीनता) गुणा के कारण प्रसिद्ध या प्रचलित हो गया था। इसी दाक्षिण्य गुण के कारण मानो उसका 'सुदक्षिणा' यह वैयक्तिक नाम सार्थक था अर्थात् वह यथानाम तथागुण थी।

अध्वरस्य अमवानं (स्वर्गमार्ग) राति ददाति इति अध्वरः अर्थात् स्वर्ग की ओर ले जाने वाला। अध्वर शब्द की दूसरी व्युत्पत्ति है- न ध्वरः, अध्वरः अथवा, न ध्वरति इति अध्वरः। यज्ञ-हवन आदि।

दक्षिणा यज्ञ में पुरोहितों को दिया जाने वाला एक प्रकार का यज्ञ-शुल्क। यज्ञ कराने वाले पुरोहित को यज्ञ के अन्त में शुल्क के रूप में प्रदान किया जाने वाला धन या द्रव्य; यज्ञ में 'दक्षिणा' को इतना महत्त्व दिया गया है कि उसको यज्ञ-पत्नी माना गया है। दक्षिणा के बिना यज्ञ अधूरा समझा जाता है। देखिए-

दक्षिणा यज्ञपत्नी च दीक्षा सर्वत्र पूजिता।
यया विना ही विश्वेषु सर्व कर्म हि निष्फलम्।।

दक्षिणा के साथ सुदक्षिणा की तुलना, सुदक्षिणा की अत्यधिक पवित्रता की सूचक है। जिस प्रकार दक्षिणा के बिना यज्ञ निष्फल होता है, उसी प्रकार सुदक्षिणा के बिना दिलीप के धार्मिक यज्ञादि कर्म सफल नहीं होते थे।